खण्ड – 3 : प्रमुख विचारक – 2

इकाई – 4 : आई. ए. रिचर्ड्स

इकाई की रूपरेखा

3.4.0. उद्देश्य कथन
3.4.1. प्रस्तावना
3.4.2. आई. ए. रिचर्ड्स : व्यक्ति परिचय
  3.4.2.1. व्यक्तित्व
  3.4.2.2. कृतियाँ
3.4.3. आई. ए. रिचर्ड्स का काव्य चिन्तन
  3.4.3.1. मूल्य सिद्धान्त
  3.4.3.2. भाषा सिद्धान्त
  3.4.3.3. अर्थ मीमांसा चिन्तन
  3.4.3.4. लय और छन्द
3.4.4. आई. ए. रिचर्ड्स की सम्प्रेषणीयता का सिद्धान्त
3.4.5. आई. ए. रिचर्ड्स का अवदान
3.4.6. सारांश
3.4.7. शब्दावली
3.4.8. उपयोगी ग्रन्थ सूची
3.4.9. सम्बन्धित प्रश्न

3.4.0. उद्देश्य कथन

पाश्चात्य काव्यशास्त्र के प्रमुख विचारक-2 खण्ड की यह चौथी और अन्तिम इकाई है जिसमें आप आई. ए. रिचर्ड्स के साहित्य चिन्तन का अध्ययन करेंगे। इसके पहले आप इसी खण्ड में मैथ्यू आर्नल्ड, बेनेदितो क्रोचे और टी. एस. एलियट के काव्यशास्त्रीय चिन्तन की जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। पाश्चात्य काव्य चिन्तन में नई समीक्षा को सैद्धान्तिक आधार प्रस्तुत करने वाले विचारकों में आई. ए. रिचर्ड्स स्मरणीय हैं, क्योंकि विज्ञान व मनोविज्ञान की सहायता से उन्होंने काव्य चिन्तन को महत्त्वपूर्ण व उल्लेखनीय आधार प्रदान किया है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप –

3.4.0.1. आई. ए. रिचर्ड्स के मूल्य सिद्धान्त, भाषा सिद्धान्त, अर्थ मीमांसा चिन्तन, लय और छन्द के विषय में बता सकेंगे।

3.4.0.2. काव्यानुभूति के आलोक में उनकी सम्प्रेषणीयता के सिद्धान्त का विश्लेषण कर सकेंगे।

3.4.0.3. उनके रचनात्मक अवदान का मूल्यांकन कर सकेंगे।

3.4.1. प्रस्तावना

आधुनिक पाश्चात्य आलोचकों में आई. ए. रिचर्ड्स का काव्य चिन्तन क्रमबद्ध एवं विस्तृत है। इनसे पहले पाश्चात्य काव्य जगत् में काव्य समीक्षा के अनेक सिद्धान्त प्रचलित थे। उदाहरण के तौर पर बेनेदितो क्रोचे तब तक नूतन वैज्ञानिक उपलब्धियों के आधार पर अभिव्यंजनावाद को स्थापित कर चुके थे तथा युंग, एडलर, सिग्मण्ड फ्रायड आदि विचाराकों ने मनोविश्लेषणवाद का प्रतिपादन किया। मैक्स ईस्टमैन ने कविता को विज्ञान का अनुगमन करने की सलाह दी, परन्तु कल्पना से सम्बद्ध होने के कारण विज्ञान के समक्ष कविता की उपयोगिता व महत्ता कम होने लगी। ऐसे में मैथ्यू आर्नल्ड ने यह मत स्थापित किया कि धर्म और संस्कृति के इस संक्रान्ति काल में केवल कविता ही मानव का उद्धार कर सकती है। उस संक्रान्ति काल में मनोवैज्ञानिक उन्नति एवं भौतिक समृद्धि के सन्दर्भ में कविता का अवमूल्यन होने लगा। तत्युगीन परिवेश में तब आई. ए. रिचर्ड्स जैसे व्यक्तित्व का मनोविज्ञान के क्षेत्र से साहित्य के क्षेत्र में आगमन होता है जिन्होंने मनोविज्ञान का आधार लेकर अपने काव्य स्थापनाओं की व्याख्या करते हैं। उनका मूल्य सिद्धान्त गहरे स्तर पर कलाशास्त्र और मनोविज्ञान के गहन चिन्तन पर केन्द्रित है। भाषा और अर्थ मीमांसा के क्षेत्र में भी उनकी उल्लेखनीय भूमिका है। हिन्दी साहित्य में भी आचार्य रामचन्द्र शुक्ल प्रथम बार आई. ए. रिचर्ड्स की चर्चा करते हैं। हिन्दी समीक्षा जगत् में आज भी रिचर्ड्स के काव्य चिन्तन को रेखांकित किया जाता है।

3.4.2. आई. ए. रिचर्ड्स : व्यक्ति परिचय

भौतिकवादी दर्शन और विज्ञान की निरन्तर प्रगति के साथ कविता की सार्थकता और उपयोगिता को लेकर संशयात्मक परिवेश में आई. ए. रिचर्ड्स का व्यक्तित्व उभरकर सामने आता है। उन्होंने आध्यात्म दर्शन, भाषा, मनोविज्ञान, विज्ञान आदि को मिलाकर नवीन काव्य सिद्धान्तों की महत्त्व प्रतिष्ठा की है। उन्होंने यह विश्वास प्रकट किया कि काव्य से व्यक्ति, समाज और जाति में सन्तुलन पैदा होता है। उनके व्यक्तित्व की खासियत इस अर्थ में भी है कि उन्होंने अपने युग में विज्ञान के बढ़ते आतंक को मिटाने के लिए विज्ञान की पद्धति और मनोविज्ञान का सहारा लिया।

3.4.2.1. व्यक्तित्व

आई. ए. रिचर्ड्स का जन्म इंग्लैंड में 26 फरवरी 1893 को हुआ। बचपन से ही वे अध्ययनशील प्रवृत्ति के थे। उन्होंने अंग्रेजी, अर्थशास्त्र और मनोविज्ञान जैसे विषयों में अपनी अकादमिक शिक्षा पूरी की। डी. लिट्. की उपाधि उन्होंने हार्वर्ड विश्वविद्यालय से ग्रहण की। साथ ही कई वर्षों तक वे हार्वर्ड विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्रोफेसर भी रहे। वर्तमान यूरोपीय काव्यशास्त्र में आई. ए. रिचर्ड्स का योगदान परिणाम व गुणवत्ता दोनों ही दृष्टियों से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

3.4.2.2. कृतियाँ

आई. ए. रिचर्ड्स का रचनाकाल सन् 1922 से 1974 के मध्य माना जाता है। सहलेखक (सी. के. आग्डेन और जेम्स वुड के साथ) के रूप में उनकी पहली कृति 'दि फाउंडेशन ऑफ एस्थेटिक्स' का प्रकाशन 1922 ई. में हुआ। कुल मिलाकर उन्होंने लगभग बारह ग्रंथों की रचना की है। 'प्रिंसिपल्स ऑफ लिटरेरी क्रिटिसिज्म' रिचर्ड्स की बहुचर्चित कृति है। उनकी अन्य रचनाओं में 'मेन्सियस ऑफ द माइंड' (1931), 'एक्सपेरिमेंटस इन मल्टिपिल डेफिनीशन' (1932), 'बेसिक रूल्स ऑफ रीजन' (1933), 'कॉलरिज ऑन इमैजिनेशन' (1934), 'दि फिलॉसफी ऑफ रेटरिक' (1936), 'इंटरप्रटेशन इन टीचिंग (1938), 'दि स्पेक्युलेटिव इंस्ट्रूमेंटस' (1955), 'पोएट्रीज : देयर मीडिया एंड एंड्स (1973), 'हाउ टु रीड ए पेज', 'प्रैक्टिकल क्रिटिसिज्म', 'सायंस एंड पोएट्री' व 'बियोंड' (1974) उल्लेखनीय हैं।

3.4.3. आई. ए. रिचर्ड्स का काव्य चिन्तन

पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परम्परा में आई. ए. रिचर्ड्स का पदार्पण तत्युगीन परिस्थितियों के सन्दर्भ में पूरी तरह उचित और आवश्यक था। कहना सही होगा कि एक लम्बी कालावधि में उनके काव्यशास्त्रीय चिन्तन व रचनात्मक सक्रियता के विभिन्न पहलुओं की अनदेखी नहीं की जा सकती। उनकी स्थापनाओं में कविता तथा साहित्य के मूल्यांकन ऐसे सशक्त प्रतिमान और ऐसी दृष्टियाँ विकसित हुई हैं जिन्होंने युग की साहित्यिक चिंतना पर अपने गहन प्रभाव छोड़े हैं। उनकी प्रमुख सैद्धान्तिक मान्यताओं में मूल्य सिद्धान्त, भाषा सिद्धान्त, अर्थ मीमांसा सिद्धान्त, लय और छन्द आदि वस्तुतः काव्य सर्जना के मूल्यांकन हेतु नई कसौटियाँ लिए हुए एक ऐसे समय में अभूतपूर्व आवश्यकता बनकर सामने आईं, जबकि युगीन परिस्थितियाँ उसके बिल्कुल अनुरूप थीं।

3.4.3.1. मूल्य सिद्धान्त

विदित है कि आई. ए. रिचर्ड्स के पहले प्रो॰ ब्रेडले ने काव्य के सौन्दर्यानुभूति का समर्थन किया और उसको जीवन से अलग स्वीकार किया। लेकिन, रिचर्ड्स ने उसका खण्डन करते हुए कला काव्य का जीवनमूलक मूल्यों से घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित किया है। उनकी दृष्टि में काव्य रचना एक मानवीय क्रिया है और इसके मूल्य का मान नहीं होना चाहिए जैसा कि अन्य मानवीय क्रियाओं का होता है। उनके मतानुसार मूल्यांकन सम्बन्धी धारणाओं का सम्बन्ध मानसिक उद्वेगों से हैं। इसके दो रूप हैं – पहला, प्रवृत्तिमूलक (भूख, तृष्णा, वासना आदि) तथा दूसरा, निवृत्तिमूलक (घृणा, निर्वेद, वितृष्णा आदि)।

आई. ए. रिचर्ड्स का मानना है कि जो मनुष्य के प्रवृत्तिमूलक उद्वेगों की संतुष्टि करे, वही मूल्यवान है क्योंकि वह उसके मन की विविध मांगों की संतुष्टि करताहै। साथ ही काव्य अथवा साहित्य का मूल्य इस प्रक्रिया में है कि वह हमारे उद्वेगों में संगति और सन्तुलन स्थापित करे। चूँकि, कविता रचनाओं की तुष्टि करती है, इसलिए वह मूल्यवान है। वह कविता और भी मूल्यवान है जो ऐसी श्रेष्ठ आकांक्षाओं की सृष्टि करे जिससे कम से कम वृत्तियां क्षुब्ध होती हों। इस प्रकार रिचर्ड्स की अवधारणा में कविता भौतिक वस्तुओं से अधिक मूल्यवान है।

उल्लेखनीय है कि आई. ए. रिचर्ड्स ने कला को 'साधारण मनुष्यों का सिद्धान्त' कहा है। वस्तुतः वे मूल्यवादी विचारक हैं। यही कारण है कि वह 'कला, कला के लिए' सिद्धान्त का विरोध करते हैं। चिन्तन की व्यापकता के कारण आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भी रिचर्ड्स के इस सिद्धान्त का पूरा समर्थन किया है। उदाहरण के तौर पर श्रेष्ठ कला की चर्चा करते हुए आचार्य शुक्ल ने भी यह मत प्रकट किया है कि यदि वह मानव सुख की अभिवृद्धि में निरत हो, पीडितों के उद्धार या हमारी पारस्परिक सहानुभूति के विस्तार में संलग्न हो अथवा हमारे अपने विषय में या हमारे या वस्तु जगत् के परस्पर सम्बन्ध के विषय में ऐसे नए या पुराने सत्य का आख्यान करे जिससे उक्त भूमि पर हमारी स्थिति और सुदृढ़ हो, तो वह महान् कला होगी।

आई. ए. रिचर्ड्स की प्रबल धारणा है कि वे प्रवृत्तियाँ जो किसी अनुभव या मानसिक क्रिया द्वारा उत्पन्न की जाती हैं, मूल्यवान हैं। इस तरह किसी अनुभव का मूल्य उसके उत्तरकालीन प्रभाव द्वारा आँका जाता है। साथ ही साहित्य के प्रभाव मूल्य को स्वीकार करते हुए उन्होंने यह मत प्रकट किया है कि कलाकार की अनुभूतियों में कम से कम अनुभूतियों में जो उसकी कृति को मूल्यवान बनाती है, ऐसे आवेगों का सामंजस्य स्थापित होता है जो अधिकांशत: लोगों के मन में अस्त-व्यस्त, परस्पर अन्तर्भूत तथा छन्दभूत हुआ करते हैं। इस प्रकार जो कविता श्रोता या पाठक के मन को जितना अधिक प्रभावित कर सकती है, वह उतनी ही उत्कृष्ट कहलाएगी। इस सन्दर्भ में रिचर्ड्स ने काण्ट के पूर्ववर्ती और पखर्ती लेखकों का हवाला देते हुए उन्होंने कहा है कि जो लोग कलाओं के सन्दर्भ में विशिष्ट, अद्वितीय, असाधारण कला अनुभव की सत्ता स्वीकार करते थे या उसके पक्ष में चुन-चुनकर दलीलें पेश करते थे, वे दलीलें आज भ्रामक सिद्ध हुई हैं। मनोविज्ञान के क्षेत्र में इस प्रकार के किसी भी अनुभव के लिए स्थान ही नहीं है।

कविता के उद्देश्य को लेकर आई. ए. रिचर्ड्स बहुत सजग हैं। उनकी दृष्टि में कविता का मुख्य उद्देश्य मनुष्य की अधिकाधिक वृत्तियों को परितोष प्रदान करते हुए उनमें सन्तुलन तथा सामंजस्य स्थापित करना है। उनके अनुसार ऐसी कोई भी वस्तु या व्यापार जो किसी वृत्ति को परितोष या संतोष प्रदान करती है, मूल्यवान होता है। हालाँकि, उसकी मूल्यवत्ता के मूल्यांकन का आधार यह होता है कि वह अपने समान या अपने से महत्त्वपूर्ण किसी वृत्ति में विक्षोभ पैदा न करे। चूँकि, वृत्तियों की परितोष प्रक्रिया में कुछ को तोष और कुछ में क्षोभ पैदा होता ही है, इसलिए उत्तमोत्तम सन्तुलन वही है जो मानवीय सम्भावनाओं की कम से कम क्षति करे। वास्तव में यह सन्तुलन और सामंजस्य भी दो रूपों में घटित होता है – पहला, अपवर्जन तथा दूसरा, समावेशन। इसी को आधार बनाकर रिचर्ड्स कविता के दो रूप स्वीकार करते हैं – पहला, अपवर्जी कविता तथा दूसरा, समावेशी कविता। उल्लेखनीय है कि अपवर्जी कविता में घटित होने वाले सामंजस्य या सामरस्य में परस्पर विरोधी भावों के निषेध से सामरस्य सीधा व सरल होता है, जबकि समावेशी काव्य में सामंजस्य का प्रभाव सघन, एकाग्र किन्तु जटिल होता है। काव्य में निहित 'विडम्बना' तत्त्व के आधार पर रिचर्ड्स समावेशी काव्य के महिमा को प्रतिपादित करते हैं तथा अपवर्जी काव्य को कला में श्रेष्ठ स्थान नहीं प्रदान करते। क्योंकि, रचना में परस्पर आवेगों-संवेगों-भावों को एकत्र करते हुए एकाग्र करने का कार्य भी 'विडम्बना' के द्वारा ही होता है। वस्तुतः रिचर्ड्स ने जिसे 'विडम्बना' कहा है, उसे ही टी. एस. एलियट 'विदग्ध' कहते हैं। 'विदग्ध' का कार्य भी रचना में आन्तरिक सन्तुलन स्थापित

करना होता है। लेकिन, एलियट से रिचर्ड्स के चिन्तन में भिन्नता इस अर्थ में है कि वे आन्तरिक सन्तुलन को कविता की पूरी रचना में व्याप्त न मानकर कविता के प्रभाव में मानते हैं। अपनी बहुचर्चित कृति 'दि प्रिंसिपल्स ऑफ लिटरेरी क्रिटिसिज्म' में आई. ए. रिचर्ड्स ने यह मत प्रकट किया है कि जीवन में सन्तुलन और व्यवस्था के बिना हम जीवित नहीं रह सकते। प्रति क्षण हमारे आवेग या मनोवेग स्वत: व्यवस्थित होते रहते हैं। व्यवस्था उत्पन्न करने में साहित्य और कला से विशेष सहायता मिलती है।

रिचर्ड्स के अनुसार काव्य अथवा साहित्य का वैशिष्ट्य इस मायने में है कि साधारण जीवन की सरल मनोदशा या मनोभूमिका की तुलना में उससे कहीं अधिक मानसिक जटिलता होती है। विवेचनार्थ, काव्य प्रभाव और काव्य प्रयोजन के आलोक में आई. ए. रिचर्ड्स के 'मूल्य सिद्धान्त' का सार निम्नवत है –

(i) कला तथा कलानुभूति जीवन के मानव व्यापारों से सम्बद्ध हैं। काव्यानुभूति या कलानुभूति जीवनानुभूति का पर्याय है।

(ii) मानव क्रियाओं में कला सर्वाधिक मूल्यवान क्रिया है।

(iii) किसी भी मानव क्रिया का मूल्य इस बात से सुनिश्चित होता है कि उसमें मनोवेगों में सन्तुलन और सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता कहाँ तक है।

(iv) मूल्य व्यवस्था और सम्प्रेषण आलोचना के दो आधार हैं। काव्य सम्प्रेषण से उत्पन्न कविता का प्रभाव तथा उसके आधार पर मूल्य निर्धारण ही रिचर्ड्स के काव्य चिन्तन का केन्द्रीय तत्त्व है।

3.4.3.2. भाषा सिद्धान्त

काव्यभाषा के सवाल पर आई. ए. रिचर्ड्स 'सम्प्रेषणीयता' को बहुत अहमियत प्रदान करते हैं। उनके अनुसार भाषा ही सम्प्रेषण का साधन और माध्यम है। इस माध्यम का उपयोग हर रचनाकार अपने-अपने ढंग से करता है। उनकी दृष्टि में भाषा प्रतीक व्यवस्था है और यह प्रतीक व्यवस्था ही रचनाकार और पाठक के बीच एक मानसिक वृत्तियों अर्थ-गुच्छ निहित होते हैं। इस मायने में अर्थ ग्रहण के अनेक स्तर हैं। चूँकि, देशकाल व वातावरण का सन्दर्भ भी अर्थ को बदल देता है, इसलिए भाषा को समझने के लिए मनोविज्ञान के साथ-साथ व्याकरण भी सहायक होता है। भाषा का मुख्य कार्य है – सरल और जटिल अर्थ को सम्प्रेषित करना। इस आलोक में उन्होंने दो प्रकार के भाषा सम्बन्धी प्रयोगों की विवेचना की है – पहला, वैज्ञानिक प्रयोग तथा दूसरा, रागात्मक प्रयोग।

भाषा सम्बन्धी वैज्ञानिक प्रयोग पर रिचर्ड्स का मानना है कि जब किसी सन्दर्भ विशेष के लिए वक्तव्य दिया जाता है, वह चाहे सत्य हो अथवा मिथ्या हो, इसे सूचनात्मक, तथ्यात्मक अथवा अभिधात्मक भाषा प्रयोग भी कह सकते हैं। इसके अन्तर्गत शब्द द्वारा हमें किसी तथ्य की सूचना मिलती है तथा उसका यथार्थ बोध होता है। चूँकि, विज्ञान की भाषा तथ्यात्मक होती है, इसलिए इसके अन्तर्गत 'गधा' शब्द का अर्थ कोई लक्ष्यार्थ न होकर 'चार पैरों वाला पशु' विशेष ही होता है।

हालाँकि, भाषा का रागात्मक प्रयोग जैसा कि आई. ए. रिचर्ड्स ने कहा है कि मनोवेगों तथा दृष्टिकोण को प्रभावी बनाने के लिए किया जाता है। काव्य में रागात्मक या भावात्मक प्रयोग ही प्रभावी और महत्त्वपूर्ण होता है। इसमें पदार्थ का उल्लेख मात्र सूचनात्मक न होकर पाठक के मन में अभिप्रेत भावों को आहूत करने के लिए होता है। इसी आधार पर उन्होंने काव्य में शुद्ध कथन की उपेक्षा करके छद्म कथन की महत्ता स्वीकार किया है।

अस्तु, आई. ए. रिचर्ड्स ने भाषा के बारे में कहा है कि जिस भाषा में रूपकों का प्रयोग किया जाता है, वह सर्वाधिक उच्च स्तर की भाषा होती है। उनकी प्रबल धारणा है कि शब्द का अर्थ प्रसंग के अन्तर्गत ही उद्घाटित होना चाहिए। इस प्रकार भाषा का अर्थ सम्बन्धी सन्दर्भ सिद्धान्त प्रस्तुत करने का श्रेय रिचर्ड्स को ही जाता है। इसी सन्दर्भ सिद्धान्त से काव्य भाषा में लाक्षणिकता और अनेकार्थकता को समुचित स्थान मिला है।

3.4.3.3. अर्थ मीमांसा चिन्तन

विदित है कि आई. ए. रिचर्ड्स ने अपनी महत्त्वपूर्ण कृति 'प्रैक्टिकल क्रिटिसिज़्म' में 'अर्थ-विचार' प्रस्तुत किया है। काव्य के मूल्यांकन में 'प्रसंग' के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने यह मत प्रकट किया है कि शब्द का अर्थ वाक्य के पूरे 'अर्थ-प्रसंग' में ही प्रकट होता है। ऐसी दशा में हम शब्दों को बिल्कुल अलग नहीं ले सकते। इतना ही नहीं, शब्द का अर्थ परम्परागत प्रयोग से भी निर्धारित रहता है।

आलोच्य सन्दर्भ में आई. ए. रिचर्ड्स ने 'अर्थ-ग्रहण' और 'अर्थ-व्यापार' पर व्यापक चिन्तन करते हुए चार प्रकार के अर्थों का निर्देशन किया है – पहला, वाच्यार्थ (वस्तुस्थिति को सामने लाने वाली प्रमुख शब्दशक्ति), दूसरा, भाव (विषय के प्रति लेखक अथवा वकता की चेष्टा), तीसरा, ध्वनि या लहजा (पाठक के प्रति लेखक की चेष्टा) तथा चौथा, अभिप्राय (लेखक अथवा वक्ता का अभिप्राय)। इन चारों के सामंजस्य से ही भाषा का समग्र अर्थ व्यंजित होता है। इतना ही नहीं, इन चारों का सम्बन्ध अर्थ लय से निर्धारित हुआ करता है। इस सन्दर्भ में रिचर्ड्स अर्थ की स्थिति लय में ही स्वीकार करते हैं।

उल्लेखनीय है कि आई. ए. रिचर्ड्स ने 'फिलॉसफी ऑफ रेटरिक' में शब्दों के स्वभाव, उनके साहचर्य के नियम, शब्द-संगति तथा वाक्य विन्यास पर विशेष ध्यान दिया है। 'रूपक' पर चर्चा करते हुए उन्होंने यह विचार प्रकट किया है कि जटिल रूपकों में कभी-कभी तो अर्थ के सात-आठ स्तर मिलते हैं और आधुनिक कविता की दुरूहता बहुत हद तक कुछ रूपकों की जटिलता के कारण ही है।

3.4.3.4. लय और छन्द

आई. ए. रिचर्ड्स कविता की बाह्य व्यवस्था को लेकर बहुत सजग हैं। उनका विश्वास है कि परम्परागत व्यवस्थित छंदों में लिखी हुई कविता एक 'नियत परिपाटी' में ढली होती है और नियमबद्ध होने के कारण एक लीक पर पड़ी दिखाई देती हैं। उदाहरण के तौर पर लैटिन कविताओं में छंदों के कठोर अनुशासन के कारण ही

उच्च महत्ता को प्राप्त नहीं कर सकी हैं। यद्यपि 'लय' कविता के लिए अनिवार्य है, तथापि इस लय का स्वरूप भी स्वीकृत छंदों के लय में बन्धकर पूरी तरह सतही हो जाता है।

चूँकि, लय की स्थिति काव्यार्थ की गहराई में है, इसलिए रिचर्ड्स के विचारों की नवीनता पाश्चात्य काव्य चिन्तन में विशेष महत्त्व की हैं। उनके अनुसार लय केवल ध्वनि-व्यवस्था मात्र नहीं है, अपितु गहरे स्तर पर वह अर्थ व्यवस्था भी है। और, छन्द की उपयोगिता लय को नियमित करने में है। हालाँकि, छंदों का यांत्रिक प्रयोग रिचर्ड्स को स्वीकार्य नहीं है। और छन्द की मनोवैज्ञानिक व्याख्या करते हुए यह मत स्थापित करते हैं कि काव्य तथा संगीत में लय इस प्रकार नियोजित की जाती है कि अर्थ की भावी सम्भावनाओं का प्रकाश मन में छाया रहता है।

आई. ए. रिचर्ड्स मीमांसा को कला की बजाय शास्त्र कहते हैं। उनके अनुसार मीमांसा केवल मूल्यांकन ही नहीं करती, अपितु मानदण्ड भी निर्धारित करती है। अर्थ मीमांसा के आलोक में वे अर्थ की गहराई को समझने के लिए जहाँ एक ओर भाषा में स्पष्टता, तथ्यपरकता एवं तार्किकता को आवश्यक मानते हैं, वहीं दूसरी ओर रहस्यमयता एवं अस्पष्टता को अर्थगत दोष के रूप में व्याख्यायित करते हैं।

3.4.4. आई. ए. रिचर्ड्स की सम्प्रेषणीयता का सिद्धान्त

आई. ए. रिचर्ड्स ने मनोविज्ञान का आधार लेकर काव्य में सम्प्रेषणीयता के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है। उनके अनुसार सम्प्रेषणीयता में जो कुछ होता है, वह यह होता है कि कुछ विशेष परिस्थितियों में विभिन्न मस्तिष्क प्राय: एक जैसी अनुभूति प्राप्त करते हैं। इस प्रकार सम्प्रेषणीयता किसी अन्य की अनुभूति को अनुभूत करना है। इस परिप्रेक्ष्य में कवि, कलाकार या सर्जक की अनुभूतियों का भावक द्वारा अनुभव किया जाना ही सम्प्रेषण है।

सम्प्रेषणीयता के आधारभूत तत्त्वों पर विचार करते हुए आई. ए. रिचर्ड्स ने इसका श्रेय कवि की वर्णन क्षमता और श्रोता या पाठक की ग्रहण शक्ति को दिया है। उनकी दृष्टि में कला में सम्प्रेषणीयता आवश्यक है, लेकिन इसके लिए कलाकार को अलग से प्रयत्न नहीं करना चाहिए। क्योंकि, कलाकार जितना सहज और स्वाभाविक रूप से अपना कार्य करेगा, उसकी अनुभूतियाँ उतनी ही सम्प्रेषणीय बनेंगी।

काव्य सम्प्रेषण की प्रक्रिया का विश्लेषण करते हुए आई. एच. रिचर्ड्स ने उसे छह भागों में विभाजित किया है –

1) मुद्रित शब्दों का नेत्रों के माध्यम से ग्रहण।
2) नेत्रों द्वारा प्राप्त संवेदनाओं से सम्बन्धित विषयों का ग्रहण।

3) स्वतंत्र विषयों का ग्रहण।

4) विभिन्न वस्तुओं का बोध।

5) भाषानुभूति।

6) दृष्टिकोण सामंजस्य।

सर्वप्रथम काव्य के पढ़ने से अक्षरों, उसकी स्पष्टता, शुद्धता आदि का बोध होता है। उसके बाद उन अक्षरों से पाठक अथवा श्रोता के मन में बिम्ब बनने प्रारम्भ होते हैं। रिचर्ड्स के अनुसार किसी कविता को पढ़कर दो पाठकों के मन में एक जैसे दो बिम्ब उत्पन्न नहीं होंगे। यह भी सम्भव है कि सभी पाठकों के मन में अलग-अलग बिम्ब बनें। अत: काव्य में मूर्त विधान का बहुत अधिक महत्त्व नहीं है। काव्यानुभूति व सम्प्रेषणीयता के सन्दर्भ में आइ. ए. रिचर्ड्स यह मत स्थापित करते हैं कि मूर्त विधानजन्य स्थिति से भी अधिक महत्त्वपूर्ण भाव तत्त्व है जिसके कारण विभिन्न पाठकों के अनुभव में समानता आती है। विवेचनार्थ, सम्प्रेषण सिद्धान्त की उपयोगिता एवं महत्त्व के सन्दर्भ में कतिपय महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं का उल्लेख किया जा सकता है; यथा –

(i) रिचर्ड्स वस्तुतः काव्य का मूल्यांकन रागात्मक आधार पर करते हैं और पाठकों के मन पर पड़े प्रभावों के आधार पर ही उसे आँकते हैं।

(ii) मनोविज्ञान के आधार पर विश्लेषण करते हुए वे सम्प्रेषण सिद्धान्त में आदिम आवेगों की सत्ता स्वीकार करते हैं। उल्लेखनीय है कि रस सिद्धान्त में स्थायी भाव की सत्ता 'वासना रूप में विद्यमान' भावों के रूप में की गई है।

(iii) रस सिद्धान्त में जहाँ भिन्न- भिन्न रसों की चर्चा की गई है, वही रिचर्ड्स ने विरोधी आवेगों को स्वीकार किया है।

(iv) रिचर्ड्स का सम्प्रेषण सिद्धान्त भारतीय काव्यशास्त्र में वर्णित साधारणीकरण के बहुत निकट है।

(v) संचार की दृष्टि से भाषा में लहजा विशेष महत्त्वपूर्ण है जिसका आधार सम्बन्ध न होकर भावदशा है।

3.4.5. आई. ए. रिचर्ड्स का अवदान

आई. ए. रिचर्ड्स के काव्य सिद्धान्त ने अपने युग के समीक्षकों को बहुत अधिक आकर्षित किया है। उन्होंने साहित्य का एक ऐसा वातावरण खोजने का प्रयास किया है जो भाषा विज्ञान, मनोविज्ञान और नीतिशास्त्र के तत्त्वों से समन्वित है। उन्होंने विज्ञान के युग में विज्ञान के आतंक से मुक्तहोकर कविता न केवल कविता के महत्त्व को प्रतिष्ठित किया है, अपितु साहित्यालोचना को वैज्ञानिक वस्तुनिष्ठता प्रदान करने की दिशा में उल्लेखनीय प्रयास भी किया है। साथ ही कलावाद का पूरी तार्किकता से खण्डन करते हुए रिचर्ड्स काव्यानुभव को जीवनानुभव की ठोस जमीन पर स्थापित करते हैं।

कहना सही होगा कि उन्होंने पाश्चात्य काव्यशास्त्रीय चिन्तन को नवीन दिशा प्रदान की है तथा नए शब्दों से उसे बहुत समृद्ध किया है। विवेचनार्थ, आई. ए. रिचर्ड्स के काव्यशास्त्रीय अवदान को निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत प्रस्तुत किया जा सकता है –

(i) मानव एक विचारशील प्राणी है। आई. ए. रिचर्ड्स ने काव्यशास्त्रीय चिन्तन के निहितार्थ मानवीय व्यवहार एवं क्रियाओं में कला को सर्वाधिक मूल्यवान क्रिया स्वीकार किया है।

(ii) उनकी दृष्टि में कविता विचारों की अभिव्यक्ति के लिए नहीं, अपितु भावों के प्रभाव के लिए होती है। इसलिए साहित्य में अभिव्यक्त विचार भाव और दृष्टिकोण के निमित्त होते हैं।

(iii) आई. ए. रिचर्ड्स की स्थापना में सम्प्रेषण एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। उसके लिए कलाकार को न तो सजग रहने की आवश्यकता है और न ही अलग से प्रयत्न करने की।

(iv) काव्य अनुभूति में भावोदीप्ति को उद्देश्य मानते हुए भी उन्होंने उसका लक्ष्य हमारे आवेगों को सुव्यवस्थित करना बताया है।

(v) रिचर्ड्स का मानना है कि समालोचना केवल मूल्यांकन ही नहीं करती है, अपितु रचनात्मक मानदण्ड भी निर्धारित करती है। यही कारण है कि वे साहित्य या काव्य का मूल्य केवल रागात्मक आधार पर स्वीकार करते हैं और साथ-ही-साथ काव्यानुभूति का मूल्य पाठक के मन पर पड़ने वाले प्रभावों को मानते हैं।

(vi) काव्य अथवा साहित्य का सरोकार विशुद्ध बौद्धिक सत्यत से न होकर भावात्मक सत्य से होता है। उल्लेखनीय है कि आई. ए. रिचर्ड्स का 'मूल्य सिद्धान्त' वस्तुतः कलाशास्त्र और मनोविज्ञान के चिन्तन और विश्लेषण पर केन्द्रित है।

3.4.6. सारांश

समवेतत: बीसवीं शताब्दी के पाश्चात्य समीक्षकों में आई. ए. रिचर्ड्स का स्थान अतीव महत्त्वपूर्ण है। यद्यपि उनकी प्रतिपादन शैली, तात्त्विक अभिव्यंजना और चिन्तन परम्परा अत्यन्त ही क्लिष्ट और दुरूह है, तथापि आधुनिक विचारकों में उनका योगदान अत्यन्त उल्लेखनीय माना जाता है। आलोचना के क्षेत्र में उनकी स्थापनाएँ लगभग सर्वग्राह्य हैं तथा मनोवेगों से सम्बन्धी उनका सैद्धान्तिक विमर्श मूलत: मौलिक एवं चिन्तन प्रधान है। उन्होंने व्यावहारिक समीक्षा के क्षेत्र में विश्लेषण और व्याख्या की पद्धति को अपनाया है। हालाँकि, भाषा और अर्थ सम्बन्धी मान्यताओं के आलोक में उनकी आलोचना मुख्यत: परवर्ती विचारकों द्वारा की गई है, फिर भी काव्य के समग्र मूल्यांकन में 'प्रसंग' के महत्त्व सम्बन्धी उनकी अवधारणात्मक उपयोगिता आधुनिक समीक्षा जगत् में सहज ही अनुभूत है, अनुकरणीय है।

3.4.7. शब्दावली

मनोवेग	:	भावोद्दीपन
मीमांसा	:	अनुशीलन
समानुभूति	:	तादात्म्य
भाव	:	विषय के प्रति लेखकीय विचार
प्रत्याशा	:	सम्भावना

3.4.8. उपयोगी ग्रन्थ सूची

1. सिन्हा, प्रो॰ सावित्री, पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परम्परा, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली.
2. जैन, निर्मला, काव्य चिन्तन की पश्चिमी परम्परा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.
3. गुप्त, शान्ति स्वरूप, पाश्चात्य आलोचना के काव्य सिद्धान्त, अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली.
4. शर्मा, डॉ॰ देवेन्द्रनाथ, पाश्चात्य काव्यशास्त्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली.
5. जैन, निर्मला, पाश्चात्य साहित्य चिन्तन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली.
6. श्रीवास्तव, अर्चना, भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, नई दिल्ली.
7. सिंह, विजय बहादुर, पाश्चात्य काव्यशास्त्र, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली.
8. भारद्वाज, मैथिलीप्रसाद, पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धान्त, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला.

3.4.9. सम्बन्धित प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. आई. ए. रिचर्ड्स के 'मूल्य सिद्धान्त' की व्याख्या कीजिए।
2. आई. ए. रिचर्ड्स की अर्थ-मीमांसा सम्बन्धी अवधारणा पर प्रकाश डालिए।
3. आई. ए. रिचर्ड्स के 'भाषा का रागात्मक प्रयोग' सम्बन्धी विचार को संक्षेप में प्रस्तुत कीजिए।
4. आई. ए. रिचर्ड्स के 'सम्प्रेषण सिद्धान्त' की उपयोगिता को स्पष्ट कीजिए।
5. आई. ए. रिचर्ड्स के आलोचक व्यक्तित्व पर अपना विचार प्रकट कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. "आई. ए. रिचर्ड्स ने भाषा, मनोविज्ञान, आध्यात्म दर्शन आदि को मिलाकर नूतन काव्य सिद्धान्तों की महत्त्व-प्रतिष्ठा की है"। इस कथन का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।
2. "कविता में सम्प्रेषणीयता के बिना उद्देश्य सिद्ध नहीं होता"। इस कथन के आलोक में आई. ए. रिचर्ड्स के भाषा सम्बन्धी दृष्टिकोण पर प्रकाश डालिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'कॉलरिज ऑन इमैजिनेशन' के रचयिता हैं –
   (a) आई. ए. रिचर्ड्स
   (b) टी. एस. एलियट
   (c) मैथ्यू आर्नल्ड
   (d) विलियम वर्ड्सवर्थ

2. आई. ए. रिचर्ड्स की अन्तिम कृति 'बियोंड' का प्रकाशन हुआ-
   (a) 1970 ई. में
   (b) 1972 ई. में
   (c) 1974 ई. में
   (d) 1976 ई. में

3. 'मूल्य सिद्धान्त' के प्रणेता हैं –
   (a) लोंजाइनस
   (b) अरस्तू
   (c) मैथ्यू आर्नल्ड
   (d) आई. ए. रिचर्ड्स

4. 'काव्य-भाषा का संवेगात्मक सिद्धान्त' के प्रतिपादक हैं –
   (a) टी. एस. एलियट
   (b) आई. ए. रिचर्ड्स
   (c) विलियम वर्ड्सवर्थ
   (d) इनमें से कोई नहीं

5. 'फिलॉसफी ऑफ रेटरिक' में उल्लेख मिलता है –
   (a) शब्दों के स्वभाव का
   (b) शब्दों के साहचर्य के नियम का
   (c) शब्द संगति तथा वाक्य विन्यास का
   (d) उपर्युक्त सभी

❖❖❖